Seventeenth Loksabha

>

Title: Regarding constitution of Review Board in UPSC.

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर): अध्यक्ष महोदय, आज मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय आपके सामने रखना चाहता हूं। आज मैं एक ऐसे व्यक्ति की चर्चा कर रहा हूं जो ईमानदारी से राजनीति करने के पर्याय थे। हम लोग उनको आदर्श मानकर चुनावी राजनीति में आए, दुर्भाग्य से वे आज हम लोगों के बीच नहीं हैं, आज उनकी त्रयोद्वशी भी है। उनका नाम जमुना प्रसाद निगम था, लेकिन लोग उनको बोस जी के नाम से जानते थे और उनको 'बुंदेलखंड का गांधी' कहा जाता था। वह उत्तर प्रदेश सरकार में तीन-चार बार मंत्री रहे, बड़े सोशलिस्ट लीडर थे और ईमानदारी के प्रतिमूर्ति थे।

सारे जीवन पॉवर में रहने के बाद भी वह किराये के घर में रहें, उनकी घर की आर्थिक स्थिति कमजोर रही लेकिन संतुष्टि भाव में रहे। चन्द्रशेखर जी के करीबी थे, एक बार उनको राज्य सभा लाने की बात की गई, लेकिन उन्होंने कहा कि नौजवान पीढ़ी को अवसर मिलना चाहिए, हम वहां नहीं जाएंगे, हम यहीं पर ठीक हैं।

मेरा कहने का तात्पर्य यह है, वह कहा करते थे कि जनता के प्रति नेताओं की जवाबदेही है। विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की भी जवाबदेही है। जब विधायिका में जनप्रतिनिधि लोग जनता की अदालत में जाते हैं और ठीक से काम नहीं करते हैं तो पांच साल बाद उनको सजा मिल जाती है। वह न्यायपालिका के बारे में भी कहते थे कि जज किसी कारण से गलत काम करते हैं तो आर्टिकल 124 सब क्लॉज 4 के तहत पार्लियामेंट को अधिकार है कि इम्पीचमेंट लेकर आ सकते हैं। मैं बहुत गहराई में नहीं जाउंगा, रात के बारह बजने जा रहे हैं और आप समय नहीं देंगे, लेकिन मैं आपसे एक मिनट का अतिरिक्त समय मांगूगा, आपकी कृपा होगी। मैं विस्तार में नहीं जाउंगा, वह बोलते थे, कार्यपालिका के बारे में वह कहते थे कि आर्टिकल 310 प्रसादपर्यन्तता के आधार पर जितने भी हमारे वरिष्ठ अधिकारी हैं, जिनका चयन यूपीएससी के आधार पर होता है। अभी वर्तमान में मेरे क्षेत्र के एक एसएसपी भ्रष्टाचार के आरोप में निलंबित किए गए और इससे बड़ी बदनामी हुई। अभी तक हमारे जनपद में ऐसा कभी नहीं हुआ था।

जब मैं एक ईमानदार नेता का नाम लेकर अपनी बात शुरू कर रहा हूं तो मेरा भारत सरकार से यह निवेदन है कि एक यूपीएससी रिव्यू बोर्ड का गठन किया जाए। जो अधिकारी अच्छा काम करते हैं, वे तरक्की पाएं, जो गड़बड़ काम करते हैं, वे पनिश किए जाएं। जो अच्छे अधिकारी हैं, उनके मौलिक अधिकारों की रक्षा भी रिव्यू बोर्ड करे। जो भ्रष्ट अधिकारी हैं उनको बाहर निकालने का भी काम किया जाए। मैं समझता हूं कि यह श्री जमुना प्रसाद बोस जी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मैं एक बात और कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा। मैं बताना चाहता हूं कि उनको लोग बोस जी क्यों कहते थे। जब देश में आजादी की लड़ाई चल रही थी, वे विद्यालय में पढ़ते थे। वे बोस जी की चर्चा किया करते थे। लोगों ने उनका उपनाम बोस रख दिया और उनको बोस जी, बोस जी कहते रहे तो उन्होंने संकल्प लिया कि जीवन पर्यंत खादी धारण करूंगा। जब इतने महान व्यक्ति के नाम से मेरा उपनाम रखा गया है तो मैं जीवन में कभी भी भ्रष्टाचार नहीं करूंगा और ईमानदारी से काम करके अपने राष्ट्र की सेवा करूंगा।